International Journal of Applied Research 2019; 5(2): 144-146

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(2): 144-146
www.allresearchjournal.com
Received: 26-12-2018
Accepted: 30-01-2019

नीतु कुमारी
शोधर्थी, हिन्दी–विभाग, ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Correspondence Author:
नीतु कुमारी
शोधर्थी, हिन्दी–विभाग, ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

कीर्तिनारायण मिश्र का काव्यः जनपक्षधरता की उर्वर भूमि

नीतु कुमारी

सारांश
स्वतंत्र भारत ने जिस समाज के अनुसार चलने का प्रयत्न किया वह अंतर्विरोध हो से भरा था। जैसे–जैसे समाज में असंगतियाँ, विद्रोह आदि का प्रवाह बढ़ता गया परिस्थितियाँ बदलती गई जिसका महत्त्वपूर्ण प्रभाव कवि मन की संवेदनाओं पर पड़ा। कवि कीर्ति नारायण मिश्र की कविताएँ समय, इतिहास, विचार, संवेदन संसार में विलायित होकर कला का नया सौंदर्य रचती है।

भूमिका
मिथिलांचल में कीर्तिनारायण मिश्र नागार्जुन के बाद के महत्त्वपूर्ण कवियों में से एक हैं। उनकी रचनाओं में लोक–जीवन की वह तस्वीर दिखाई पड़ती है, जिनको लेकर बाबा नागार्जुन हमेशा बेचैन रहते थे। कविता में घुली उनकी पत्रकारिता और वकालत की पैतरेबाजी को महसूस किया जा सकता है। इनकी कविताएँ प्रकृति के लोक लुभावन चरित्र से बिलकुल अलग है। ऐसा नहीं है कि कवि ने प्रकृति को दरकिनार कर कविता की रचना की। प्रकृति में निहित जीवन को कविता का विषय बनाया। ग्रामीण जीवन की जटिलता, राजनीतिक द्वारा आम जनता का शोषण, धर्म को हथियार के रूप में किए जाने वाले प्रयोग, यांत्रिक जीवन से मोहभंग, किसानी चेतना, परंपरा और आधुनिकता का द्वन्द, वैश्विक समस्याएँ, हाशिये पर धकेल दिए गए जातियों के प्रति संवेदना, दलितों, स्त्रियों आदि की समस्याओं से मिश्र जी की कविताएं मुठभेड़ करती दिखाई पड़ती है। कविता में निहित लोक–जीवन उनकी कविता को मजबूती प्रदान करता है। साहित्य की सभी विधाओं में किसी न किसी रूप में जीवन के अनुभव ही प्रकट होते हैं। उन्हें व्यक्त करने के लिए उपमा, उपमान, पात्र आदि को माध्यम बनाते हुए कवि शब्द विधान करता आया है। कविता का कथ्य जीवन के अनुभव होते हैं। कवि जीवन में जो देखता है या महसूस करता है उसे अपनी कविता के माध्यम से तो व्यक्त करता है, साथ ही जनसाधारण के जीवनसे जुड़कर उसकी असलियत को भी पहचानने की कोशिश करता है। मानवीय अनुभूति को प्रकट करने का सशक्त माध्यम कविता को माना जाता है। उसकी अनुभूति जीवन–जगत के विविध संदर्भों से जुड़ कर भिन्न–भिनन रूपों में प्रकट होती है। कविता मानव जीवन और सृष्टि सौन्दर्य की विशद् व्याख्या है, जिसके अध्ययन से मनुष्य की आंतरिक भावनाएँ जागृत होती है साथ ही मानव जीवन के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित करती है।
विधा चाहे कोई भी हो उसमें समाज का ही एक चित्र उभरता है, जो सामाजिक सत्यता का उद्‌बोधन करता है। हिन्दी एवं मैथिली भाषा के सशक्त कवि कीर्तिनारायण मिश्र ने अनेक विधाओं में रचनाएँ लिखी। एक निष्ठावान लेखक के सभी गुण इस कवि में दिखाई पड़ता है। साहित्य के प्रति सजगता और ईमानदार रहना कठिन काम होता है पर मिश्र जी ने इसे जीवन के संध्याकाल तक निभाते जा रहे हैं। कविता लेखन में उनकी पहचान विशिष्ट है। वे ऐसे दौर के कवि है जब एक ओर केदारनाथ सिंह प्रकृति और मनुष्य के बीच के जीवन राग को ढूंढ रहे थे, नागार्जुन सामाजिक विद्रूपता से टकरा रहे थे, धूमिल राजनीतिक गलियारों को झांक रहे थे, मुक्तिबोध ढूंढ और अंधकार की असलियत को बयाँ कर रहे थे उसी समय मिश्र जी वैज्ञानिक समझ के साथ भारतीय समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं पर गंभीर विचार कर रहे थे। मिश्रजी मिथिलांचल के उन गिने चुने कवि, आलोचक, पत्रकारों में से है जिन्होंने मिथिलांचल समाज के बहाने भारत भर के सामाजिक समस्याओं पर विचार किया। इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार सहित कई अन्य पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। इनके काव्य–संग्रह की वैचारिकता ने एक नए संवाद और विवाद को जन्म दिया। उनकी कविता बिना किसी प्रमाद के अपनी जद में लेकर पाठकों से सरल शब्दों में सार्थक संवाद स्थापित किया ळें
ग्रामीण अंचल में रहने वाले कवि कीर्तिनारायण मिश्र ने विश्वव्यापी समस्याओं को अपनी कृति में गहराई से उठाया है। उनकी रचनाएँ गाँव और शहर के बीच एक पुल का निर्माण करता है जिससे न सिर्फ समस्याओं की आवाजही हो पाती है बल्कि नगर और ग्राम संस्कृति को भी समझने जानने

का जरिया बन पाती है। आज सम्प्रदायिक घटनाएँ, धार्मिक विषमताएँ, असहिष्णुता, कट्टरपन और आतंकवाद जैसी समस्याओं से पूरा विश्व जूझ रहा है। सामाजिक भाईचारा खत्म होते जा रहे हैं, आपसी रंजिशें जीवन को जटिल बनाते जा रहे हैं। जातिवादी व्यवस्था कानूनी तौर पर खत्म होकर भी दलितों की यातनाएँ कम नहीं हुई, वर्गों में समाज तथा उनके श्रम–भेद जीवन को आसान करने की जगह और भी जटिल बनाते जा रहे हैं। खेती–किसानी का संकट गंभीर मुदा होते हुए भी किसानों की आत्महत्या के कलंकित उत्सव को रोकने में असफल रहा है। ऐसे विकट समय में किर्तिनारायन मिश्र का पत्रकार मन कविता से होकर गुजड़ता है। सच को सच कहने पर जब पत्रकारों के जुबान काट दिए गए हो ऐसे में एक पत्रकार द्वारा कविता को हथियार बना लेना कविताई दुनिया का सबसे बड़ा परिवर्तन माना जा सकता है। कीर्तिनारायण मिश्र की कविताएं पत्रकारिता के मन से निकाला वह सच है जिसे सच की तरह पढ़ा जाना चाहिए। युद्ध और शांति हमेशा अंतर्राष्ट्रीय मुद्दा रही है। दो महायुद्धों के बाद का विश्व बहुत बादल गया है। बदलते विश्व में बुद्ध और ईशा की करुणा कहीं से भी नहीं दिखाई पर रहा है। तोप और बंदूकों की खेती की जा रही है। आधिपत्य और बाहुबल की नियत ने मानवीय संवेदना को कुचल दिया है। दुनिया भर के साहित्यकारों ने इन समस्याओं पर विचार किया है। कीर्तिनारायण मिश्र की चिंता न सिर्फ सामाजिक है बल्कि वैश्विक भी है। कैसे सुविधाभोगी वर्ग ने हमेशा से साधन विहीन लोगों का शोषण किया इसका प्रमाण नीचे उद्धृत पंक्ति से लगाया जा सकता है। वे कहते हैं–

''युद्धतोप, पनडुब्बी, शस्त्रास्त्र
युद्धक विमान और प्रक्षेपास्त्र
मुझे किए हुए है व्यथित–मथित
जातिभेद
मछलियों के पंच बने 'शार्क ह्वेल'
जल समाधि लिए घड़ियाल
ध्वस्त होते शांति–स्तूप
शिखरासीन 'रडार'' [1]

कवि को सामाजिक विसंगतियों और व्यवस्था के खोखलेपन का गहरा एहसास है। आजादी के बाद जिस प्रकार से जनता को निराश किया गया यह अनेक कवियों की कविता में दिखाई पड़ता है 'कवियों का एक वर्ग ने तो आजादी को झूठी बताया' किसान गुलाम भारत में भी बेदखल हो रहे थे वहीं आजाद भारत में नक्सल कहकर मौत की घाट उतार दिए गए। कवि कीर्तिनारायण मिश्र राजनीति चालबाजी, धार्मिक सड्यंत्र तथा दोहरे चरित्र का विरोध करतेहैं। देश दुनियाँ की विसंगतियों विद्रूपताओं, दमनकारी व्यवस्था की उन्हें गहरी समझ है। वे मुक्तिबोध की तरह खुलकर व्यवस्था से सवाल करने वाले कवि हैं। मुक्तिबोध जब कहते है–

''चढ़ा रहे लकड़ी के चक्के पर जबरन
लाल–लाल लोहे की गोल–गोल पट्टी
धनमार–धनमार
उसी प्रकार अब आत्मा के चक्के पर
चढ़ाया जा रहा संकल्प शक्ति के
लोहे का मजबूत ज्वलंत टायर!!
अब युग बदला है वाकई,
चल गयी।'' [2]

भले ही ये कविताएँ 7वें दशक की कविता हो लेकिन इनकी सार्थकता आज भी जीवित है। बीते दिनों की राजनीतिक सम्प्रदायिक एवं धार्मिक घटनाएँ और उनमें हुए मानव मूल्यों का क्षय आज भी इनकी कविताओं की याद दिलाता है। मिश्र जी की कविताएँ वर्तमान परिवेश, वैज्ञानिक आविष्कारों का व्यक्ति पर पड़े प्रभाव, धर्म, राजनीति, वैश्वीकरण, बाजारबाद आदि अनेक सवालों से टकराती है। 'सीमांत' मैथिली काव्य संग्रह में वे अपने जन्म के समय को यंत्र युग कहते हैं। यह यांत्रिक युग एक कवि को कितना विचलित करता है इसकी बानगी उनकी कविताओं में भी देखी जा सकती है। गांधी का 'ग्राम स्वराज' का प्रभाव भी उनकी कविताओं में दिखाई पड़ती है। एक गाँव को यंत्र ने किस तरह से पंगु बना दिया है इसका विराधाभास दिखाई पड़ता है। मिश्र जी कहते हैं–

''बीसम शताब्दीक यन्त्र–युग मे हमर जन्म भेल अहि
माया धुँआयल अछि वैज्ञानिक अनुसंधान सँ
हृदय पर राखल अछि आर्थक्रान्तिक असह्य पाथर
बमक विस्फोट, प्रक्षेप्यासर्त्यक अन्तरिक्ष व्यापी प्रभाव सँ
भयाक्रांत अछि जीवनक प्रत्येक श्वास
यंत्रोद्भूत हमर जीवनक रहस्य
नाहि होयत अहाँ कें ज्ञात
हे कवि शिरोमणि'' [3]

वस्तुतः किसी भी युग में रची सार्थक और विशिष्ट रचना के लिए अनुभूति और युगीन यथार्थ और संवेदनशीलता दोनों आवश्यक तत्व माने जाते हैं। अनुभूति ही वह आवश्यक तत्व है जो मानवीय संबंधों, विचारों, भावों और विभिन्न घटनाओं को एक जीवंत रूप प्रदान करता है और तब कवि उस युगीन यथार्थ को संवेदनशील बोल देकर काव्य का निर्माण करता है। कबीर की तरह कीर्तिनारायण मिश्र की कविताओं में भी गाँव की बदहाली का उल्लेख हुआ है। जिस प्रकार से ब्राह्मणवादी समाज में दलितों को रहना दूभर हो गया था, उसी प्रकार गाँव के जमींदार, साहूकार, बनिया, व्यापारी (कबीर के शब्दों में विकट कसाई) गाँव के निम्न वर्गों का सबसे बड़ा शोषक रहा है। गांवों में इंका बोलबाला रहा है। लोगों के अभाव का फायदा उठाकर यह वर्ग हमेशा से लूट खसोट करता आ अरहा है, जो आज भी जारी है। मिश्र जी अपनी मथिली कविता में मिथिलाञ्चल के इन व्यवस्थाओं पर लिखते हुए कहते हैं कि–

''हमरा बुझना जाइछ
अभावक सन्नाटा
कर्जक इजोरिया
आ सूदक शीत लहरी
हमर दयनीय विकलांग भूखल देश के
माधक राति जकाँ घेरने आछि
आ हमर देश निष्क्रिय बनल
× × × × ×
× × × × ×
आश्वासनक ठेला पर
चिन्तनक पर्यवेक्षक दृष्टि
मात्र परिक्रमा करहल अछि
जाड़ मे ठिठुरैत
भारत भाग्य विधाताक'' [4]

समाज के सबसे निचले वर्ग की चिंता राजनीतिक ड्राफ्ट में तो है समाज में इनको कभी लागू नहीं किया जाता। नागार्जुन की तरह कवि ने उन ठेले वाले, रेडी पटरी वाले इत्यादि की समस्याओं को भारत के भाग्य विधाताओं के पास पेश करते हैं। यह सामाजिक सच आज भी प्रेतात्मा की तरह जनसाधारण का पीछा कर रहा है। यह कविता उस समय लिखी गई थी, जब हमरा देश आजादी के बाद के जीवन को जी रहा था। लोगों में आजादी के प्रति जो धारणाएँ थीं वो सब टूट रही थी। आम जनता की पहले से भी खराब होती जा रही है। जिन अंगेजों के खिलाफ आम

जनों ने जो लड़ाइयाँ लड़ी, वहीं लड़ाई अपने देश के राजनेताओं से लड़ने पर मजबूर होना पड़ा। ऐसे कई नेता हुए जो अंग्रेजों के जेल की यातना भी झेली और आजाद भारत की जेलों की भी। राममनोहर लोहिया इसका उदाहरण जीवंत उदाहरण है।

जहाँ एक ओर देश कई बड़ी समस्या से जूझ रहा था, जिसमें आपातकाल जैसा काला कानून जनता की हैसियत को चुनौती दी थी वही दूसरी ओर सामाजिक परिवर्तन का कोई भी स्वर सुनाई नहीं दे रहा था। कवियों कि निराशा इस बात को लेकर ज्यादा थी की जिस लोकतन्त्र के लिए जनता ने कुर्बानी दी उसी जनता को जनता होने पर सवाल उठाए जा रहे हैं। उनके हक अधिकार तथा बोलने की आजादी छीनी जा रही है। ऐसे में कवियों लेखकों की जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है। नागार्जुन अपनी जिम्मेदारी को निभाते हुए कहा है कि–

''जनकवि हूँ क्यों चाटूँगा मैं थूक तुम्हारी
श्रमिकों पर क्यों चलने दूँ बंदूक तुम्हारी'' [5]

नागार्जुन से कीर्तिनारायण मिश्र का गहरा लगाव था बल्कि दोनों के बीच पत्राचार भी खूब हुआ करते थे। ऐसे में नागार्जुन का प्रभाव न सिर्फ उनके कवि मन पर दिखाई पड़ता है बल्कि कविता नागार्जुन के विरासत को आगे बढ़ाती नजर आती है। युग की यांत्रिकता, पारिवारिक घुटन–टुटन, अस्तित्वहीन होते संबंधों और जटिल होते हुए सामाजिक जीवन की अस्तव्यस्तताओं को देखते हुए जो अनुभव आलोकित हुए वही कवि कीर्तिनारायण मिश्र की कविताओं की आधार भूमि बन गई।

''सूखल टटायल जिनगी
गेहायल विश्वसास
संक्रान्तिक देवता कें समर्पित संत्रास'' [6]

वस्तुतः कवि की भावना उसकी संवेदना पर आधारित रहती है। उन्होंने अपनी अनेक रचनाओं में विकृत व्यवस्था से उपजी आक्रोश को रेखांकित किया है। इन कविताओं में कवि की आंतरिक एवं बाह्य दोनों भावनाएँ उजागर होती है और उनकी यही अभिव्यक्ति उन्हें प्रौढ़ बनाती है। एक कवि की इसी मानसिकता को दर्शाते हुए साहित्यकार श्यामसुन्दर दास ने अपने पुस्तक 'साहित्यालोचन' में लिखा है– "कविता को हम दो भागों में विभक्त कर सकते हैं। एक तो उसमें कवि अपनी अन्तरात्मा में प्रवेश करके अपने अनुभवों और भावनाओं से प्रेरित होता है तथा अपने विषय को ढूँढ़ निकालता है, दूसरा वह जिसमें वो अपनी अन्तरात्मा से बाहर जाकर सांसारिक कृत्यों और रागों में पैठता है और जो कुछ ढूँढ़ निकालता है उसका वर्णन करता है।" [7]

समय या कालक्रम की दृष्टि से यदि हम मिश्र जी की कविताओं को देखते हैं तो भी वो समयातित प्रतित होती है। सातवें दशक के आरम्भ में देश ने एक ऐतिहासिक मोहभंग का मुँह देखा था। यह मोहभंग एक प्रकार का स्वप्न भंग था। स्वतंत्रता के पश्चात् जनसाधारण ने भविष्य के जो सुख–स्वप्न देखे थे, आर्थिक एवं सामाजिक स्तर पर उन्नति और खुशहाली की जो कल्पनाएँ की थी, उनके साकार होने के कोई लक्षण दिखाई नहीं दे रहे थे। अतः लोगों में असंतोष उत्पन्न होना स्वभाविक ही था।

''भारतीय जनता में मोहभंग की स्थिति के लिए राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय अनेक घटनाओं का योगदान रहा है। सन् 1962 के चीनी आक्रमण के बाद सन् 1965 और 1971 के पाकिस्तानी युद्ध तथा नेहरू, शास्त्री, गांधी तथा लोहिया जैसे राजनेताओं की मृत्यु आदि ने भारत के इतिहास को कई झटके दिए हैं और भी कई ऐसी घटनाएँ हैं जो सातवें दशक की उथल–पुथल का चित्र हमारे सामने प्रस्तुत करती है।" [8] कवि कीर्तिनारायण मिश्र की कविताओं में समसामयिक घटना–चक्र भी है और उनके बीच–बीच में चुनाव, शोषण व्यवस्था, युद्ध आदि प्रसंग भी आ गए हैं। इस बात में कोई संशय नहीं है कि सातवें दशक की कविताएँ आज भी राज एवं समाज के वास्तविकता को अभिव्यक्त करती है।

मिश्र जी की कविताओं में आज की भ्रष्ट राजनीति, कवि का दायित्व, आस्था–अनास्था, न्याय–अन्याय, मानवीय–अमानवीय, ईमानदार–बेइमान, सभ्यता–असभ्यता, शहर और गांव, नारी और पुरुष सभी का चित्रण है। उनकी कविता भ्रष्ट राजनीति, सिद्धांत हीनता, सत्ता के प्रति लगाव तथा व्यवस्था पर तीखा प्रहार करती है। भ्रष्ट शासन व्यवस्था और भ्रष्ट राजनेताओं पर तीखा व्यंग्य प्रकट करते हुए कवि कहता है–

''माननीय सांसदों, विधायकों, नेताओं
सबसे चहेते महामहिम अपराधियों!
आप सबके प्रति
मैं आभार प्रकट करता हूँ
धन्यवाद देता हूँ'' [9]

कवि की इस मानसिकता को दर्शाते हुए डॉ. हरदयाल करते हैं "राजनीति ने जिस तेजी के साथ सामान्य नागरिक के जीवन में हस्तक्षेप करना प्रारंभ किया है, उसी तेजी के साथ आधुनिक काल के कवि और राजनीति का द्वंद्व तीव्र हुआ है। कवि की राजनैतिक संचेतना बढ़ी है और उसके प्रभाव को शासकों ने भी अनुभव किया है।" [10]

मिश्रजी की कविताओं को भले ही आलोचकों ने गंभीरता से नहीं लिया, पर उनकी कविता सामाजिक समस्याओं से न सिर्फ टकराती है बल्कि समस्याओं को लेकर आगाह भी करते दिखाई पड़ते हैं। उनकी रचनाओं की जीवनतता का बड़ा कारण है उनकी प्रगतिशीलता। उनकी ऐसी कोई भी रचना नहीं है जिनमें इसका अभाव दिखाई दें। शिवदान सिंह चौहान ने ठीक ही कहा है कि "कलाकार स्वभावतः प्रगतिशील होता है, उसकी सृजन–चेष्टा बाह्य जीवन के अनुभव और सौंदर्यमूलक प्रवृत्ति अर्थात व्यवस्था, सामंजस्य और मुक्तिकामी निसर्ग–चेष्टा से उत्प्रेरित होती है।" [11] कीर्तिनारायण मिश्र कि इन बातों से अलग करके नहीं देखा जा सकता है। समस्याओं को आधार बनाकर काव्य लिखने वाला यह कवि कई मायने में वर्तमान समय के महत्त्वपूर्ण कवियों में से एक है।

निष्कर्षत

मिश्र जी की कविताएँ यथार्थ से जुड़कर अपने नए रूप एवं अर्थों में सामने आती हैं। कवि परिवेश गत सच्चाइयों से रू–ब–रू होकर संघर्ष कर रहे आम आदमी के साथ खड़ा होता है। वह बिगड़ती स्थिति की ओर सिर्फ संकेत ही नहीं करता बल्कि व्यवस्था के विरूद्ध शब्दों को शस्त्र के रूप में प्रयोग करना चाहता है। समाज के प्रति उसकी संवेदना एक प्रश्न बनकर सामने आती है और हमें विचलित करती है। कवि अपनी बात सीधे–सीधे बिना किसी लाग–लपेट के कहने के पक्ष में है। इनकी कविताओं में पीड़ा या यातना का स्वर बराबर मौजूद है। समग्रतः हम यह पाते हैं कि कवि कीर्तिनारायण मिश्र जी की कविताएँ आज भी समसामयिक है।

संदर्भ–सूची

1. 'ध्वस्त होइत शांति स्तूप'; कीर्तिनारायण मिश्र, पृ.– 16
2. 'भूरी–भूरी खाक धूली', मुक्तिबोध, पृ.– 21
3. 'सीमांत'; कीर्तिनारायण मिश्र, पृ.– 30
4. वही, पृ.– 35
5. आलोचना पत्रिका, जनवरी–मार्च, अप्रैल–जून 1981, पृ.– 1
6. 'सीमांत'; कीर्तिनारायण मिश्र, पृ.– 29
7. 'साहित्यालोचन'; श्यामसुन्दर दास, पृ.– 95
8. 'नयी कविता का सौदर्य बोध'; डॉ. तिलक शर्मा, पृ.– 62
9. 'जेठ की तप्त शिला'; कीर्तिनारायण मिश्र, पृ.– 40
10. 'हिन्दी कविता की प्रकृति'; डॉ. हरदयाल, पृ.– 15
11. 'प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ'; शर्मा, रामविलास, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन, संस्करण– 1954 पृ.– 1